International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

भारतीय शास्त्रीय संगीत में इमदादखानी (इटावा) घराने की वादन परम्परा : एक अध्ययन

Asha Devi

Research scholar (Music Instrumental) from Panjab University Chandigarh, India

Author Email: thakurasha743@gmail.com

घराना : भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना पद्धति एक ऐसी संस्था है, जिसमें कलाकार अपने वंश की संगीत परम्परा का निर्वाह पूरे लगाव के साथ करता है। घराना शब्द हिन्दी भाषा के 'घर' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है–'परिवार' या 'घर', संगीत में इसका अर्थ है–''जहाँ से सांगीतिक विचारधारा का जन्म होता है।'' घरानेदार संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठा का आधार माना जाता है। घराना परम्परा एक गुरु से शुरू होती है और पीढ़ी दर पीढ़ी शिष्यों द्वारा आगे बढ़ाई जाती है। हर घराने की अपनी रागदारी, ताल प्रयोग, भाव अभिव्यक्ति और तकनीकी प्रस्तुति की खास विशेषताएं होती हैं। जैसे कि ख्याल गायन में ग्वालियर, आगरा तथा किराना घराने प्रसिद्ध हैं वैसे ही वादन शैली में इमदादखानी (इटावा), मैहर और सेनिया घराने प्रसिद्ध हैं। घराने भारतीय संगीत की विविधता, गहराई और जीवंतता को संरक्षित करते हैं।

I. इमदादखानी घराने का उद्भव

इमदादखानी इटावा घराना, जिसे उस्ताद विलायत खां साहब के नाम पर विलायतखानी घराना के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे पूराने और शानदार घरानों में से एक हैं। सितार वादन के घरानों में इमदादखानी (इटावा) घराने का महत्वपूर्ण स्थान है। सितार वादन को कण्ठ–संगीत के निकट लाने के फलस्वरूप जिस वादन शैली का प्रचलन हुआ, वह इटावा–परम्परा का बाज अथवा इमदादखानी बाज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 19वीं शताब्दी के अन्त में उस्ताद इमदाद खाँ ने सितार वादन की तकनीक पर ऐसी सशक्त छाप छोड़ी की आज तक उनकी शैली को विशिष्टय 'इमदादखानी बाज' कहा जाता है। बाज के साथ ही दे–दा–दे के बोल प्रचार में आए जिनका आविष्कार इमदाद खाँ के द्वारा किया गया।

राजपूत सरोजन सिंह को सितार वादन के इटावा घराने का आदि पुरुष माना गया है। सरोजन सिंह के पुत्र तुराब खां भी एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। तुराब खां के पुत्र उ. साहिबदाद खां से ही इस घराने की स्थापना हुई। इन्हें 'साहिब सिंह' के नाम से भी जाना जाता है। साहिबदाद खां को सुरबहार वाद्य का आविष्कारक भी माना जाता है। साहिबदाद खाँ के बेटे उस्ताद इमदाद खाँ एक महान सितार वादक थे। इस घराने का नाम उन्हीं के नाम पर इमदादखानी घराना पड़ा। उ. इमदाद खाँ ही थे जिन्होंने तन्त्री वाद्यों में गायकी अंग की शुरूआत की। ये पहला मौका था जब तत् वाद्यों में गायकी अंग को प्रथम बार सफलतापूर्वक ढंग से शामिल किया गया था। इमदाद खां के बाद उनके बेटों उस्ताद इनायत खाँ और उ. वहीद खाँ ने इस घराने को प्रसिद्ध बनाया। फिर उसके बाद उस्ताद विलायत खान ने भी मींड और मुर्की की शैली को आगे विकसित किया और सितार के ढाँचे में भी परिवर्तन किया।

पं. अरविन्द पारिख के अनुसार – ''सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय योगदान साहबदाद खाँ का है, जिन्होंने सुरबहार का आविष्कार किया। उन्होंने सुरबहार की बड़े वाद्य के रूप में परिकल्पना की, जिससे दोहरा कार्य हो सकता था। वे सुरबहार पर

ख्याल–अंग जो सितार पर बजता था, के अलावा, ध्रुपद–अंग पेश करना चाहते थे। इसमें संदेह नहीं कि इन दोनों शैलियों की वादन तकनीक के अनुरूप वाद्य बनाना पड़ा।''

II. इमदादखानी घराने की वादन परम्परा

कण्ठ संगीत का माधुर्य एवं कोमलता सितार को प्रदान करने के अतिरिक्त इटावा परिवेश से सम्बद्ध कलाकारों ने सितार–वादन को कण्ठ के समस्त अंगों सहित समग्र रूप से प्रदर्शित करने पर भी जोर दिया। उक्त परम्परा के प्रस्तुतीकरण की उनकी वादन शैली ने न केवल सितार–वादन को लोकप्रिय बनाया, अपितु उसे शास्त्रीय संगीत की गरिमा के अनुरूप सुसम्बद्ध रूप भी प्रदान किया। जिसे पूरी दुनिया ने सराहा। इटावा परम्परा के प्रसिद्ध सितार वादकों में उस्ताद इमदादखान, उ. इनायत खान, उ. वहीद खान, उ. विलायत खान आदि के नाम प्राप्त होते हैं।

उस्ताद इमदाद खान भारतीय संगीत परम्परा में सितार और सुरबहार वाद्य के प्रभावशाली वादक हुए हैं। उन्होंने अपने पिता उ. साहबदाद खान द्वारा चलाई गई इटावा–परम्परा को विकसित करने में अद्वितीय योगदान दिया। इन्होंने सितार और सुरबहार की वादन शैली में विशेष परिवर्तन व परिमार्जन कर ख्याल अंग की प्रधानता को महत्व दिया। उ. इमदाद खां ने सितार वादन को समस्त अंगों सहित बजाने की परम्परा शुरू की जिसके अन्तर्गत पहले आलाप बजता था फिर जोड़ एवं झाला तत्पश्चात् मसीतखानी और रज़ाखानी गतें बजाकर उसमें विभिन्न प्रकार की तानें व तिहाइयों के पश्चात् अन्त में झाला बजाकर वादन का समापन किया जाता था। सितार वादन के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से यह वादन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान था। सितार में घसीट, चार स्वरों की मींड का प्रदर्शन और पर्दों की संख्या 19 उ. इमदाद खां की ही देन है।

उ. इमदाद खान के जाने माने शिष्य डॉ. कल्याणी मलिक, डॉ. प्रकाश चंद सेन तथा किशोरी राय चौधरी है। सन् 1920 में 62 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। सितार के इतिहास में इमदाद खां का नाम अविस्मरणीय है।

उ. इमदाद खां की परम्परा का विस्तार करते हुए उनके पुत्र इनायत खां ने रंजकता बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयोगवादी विधियों को अपनाया। उ. इनायत खां का आलाप वादन बहुत कर्णप्रिय होता था। इनके वादन में आलाप, जोड़ और गत की प्रधानता रहती थी। वे अपने सितार वादन में पखावज की जटिल प्रणाली से ग्रहण किए गए बोल, ख्याल गायकी के आधार पर मुर्की, मींड़, कण व गिटकरी आदि अलंकरणों का प्रयोग करते थे। अत्याधिक तेज़ी और सफाई से बोल बजाने में उन्हें महारत हासिल थी।

सितार वाद्य को संगीत में प्रतिष्ठित कराने का श्रेय उ. इनायत खां को है। उ. इनायत खान ने वाद्य संगीत को स्वर संगीत के बराबर उपर उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आफताबे मौखिकी स्व. फ़ैयाज खां ने दिली रेडियो स्टेशन से एक इंटरव्यू देते हुए कहा था कि इनायत खां जैसा सितार आज तक नहीं सुना। इमदाद खां के दूसरे बेटे वहीद खां ने भी इटावा घराने की सितार वादन परम्परा को विकसित किया। वहीद खां एक महान सुरबहार तथा सितार वादक थे।

10 नवम्बर 1938 ई. को उ. इनायत खान प्रातः 4 बजे परलोक सिधार गए। उ. इनायत खां एक महान कलाकार थे। उन्होंने अनेक शिष्यों को संगीत की शिक्षा दी जिनमें–विमलेन्दु मुखर्जी, डी.टी. जोशी, श्रीमती रेणुका शाह तथा उनके पुत्र उ. विलायत खां भी थे।

उ. इनायत खान की मृत्यु के बाद उस्ताद विलायत खान ने अपने घराने की सितार वादन परम्परा को अधिक विकसित करते हुए अपने वाद्य को परिष्कृत कर उसमें बाज की तार को अन्य तारों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया। समय के साथ उ. विलायत खान ने गायकी अंग और तन्त्रकारी अंग पैटर्न को मिलाकर एक क्रांतिकारी मुहावरा विकसित किया। उ. जी ने ही सही मायने में सितार वदान में गायकी अंग का मिश्रण किया था। वह अपने सितार वादन में आलाप और जोड़ालाप का प्रस्ताव अत्यंत सहजता से करते थे। वे मुर्की, कृन्तन तथा गायकी अंग की मींड का प्रयोग कुशलतापूर्वक करते थे। वे जोड़ी और बाज के तार को एक साथ ही बजाते थे जो स्वर संवाद का काम करता था। उ. विलायत खां जी गायकी अंग की प्रत्येक चीज़ का निष्पादन करते हुए गत, तोड़ा, तार परन, विविध अंगों की तानें, विलम्बित व द्रुत गतों में सपाट की तानें, तथा गमक की तानें अन्य विभिन्न प्रकार की तानों को सितार वादन में बजाते थे।

उ. विलायत खान ने अपने अथक परिश्रम से छः पीढ़ियों से चली आ रही संगीत परम्परा को जीवित रखते हुए समृद्धशाली बनाया। खां साहब सितार को पूरी तरह समर्पित एक दिव्य आत्मा थे। जिनके इटावा घराने की वादन परम्परा में दिए गए योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। उन्हें 'आफताबे सितार' तथा कई उपाधियों से विभूषित किया गया। शनिवार 13 मार्च 2004 को उनका निधन हो गया। संगीत में जब–जब सितार की गाथा लिखी जाएगी उसमें उस्ताद विलायत खान का वादन हमेशा सुबह के सूर्य की कोमल तरल–सी किरणों की तरह चमकता रहेगा। उ. विलायत खां के प्रमुख शिष्यों में–पं. अरविन्द पारिख, कल्याणी राय, काशीनाथ मुखोपाध्याय, गिरिराज धर्मवीर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

खां साहब के छोटे बेटे इमरत खां अपनी पीढ़ी के सबसे अग्रणीय सितार वादकों में से एक थे। वह सुरबहार के महान कलाकार थे। ख्याल गायकी अंग के प्रभाव के कारण उन्होंने अपने घराने की वादन परम्परा को गायकी अंग से उभारा और उसका विकास किया।

इसी घराने के प्रतिष्ठित कलाकार उ. रईस खाँ थे, जो उ. विलायत खान के भांजे थे। सितार वादन के क्षेत्र में उ. रईस खाँ का स्थान विशेष रूप से अग्रणी है। अच्छा घराना, तैयारी, सुरीलापन, संगीत–सम्मेलन में ख्याति प्राप्त करने की विशेषताएं जब किसी कलाकार में एक साथ मिल जाती हैं तो आज के संगीत जगत में जमने में उसे देर नहीं लगती, ये सभी विशेषताएं सितार वादक रईस खाँ में ही हैं। रईस खां का हाथ बहुत मीठा है, इतना मीठा की देश के बहुत कम सितारिए सुरीलेपन में इनका मुकाबला करते है। वह अपने वादन में स्वर संगतियों का विविधता से प्रयोग करते हैं तथा मींड और मुर्की का प्रयोग मधुरता एवं सुन्दरतापूर्व करते हैं। इन्होंने इटावा परम्परा की सितार का खूब प्रचार–प्रसार किया।

इमदादखानी घराने में ठुमरी तथा तराना बजाने की भी परम्परा है। उ. इमदाद खान ने यह शुरूआत की थी, जो आज तक चल रही है।

इटावा परम्परा के कलाकारों ने घराने की वादन परम्परा को शिष्य–प्रशिष्य बरकरार रखा इसलिए आज इमदादखानी घराना अधिक प्रसिद्ध है। अन्य घरानों के कलाकारों ने भी इस घराने की शैली को अपनाया है। इमदादखानी घराने की सातवीं पीढ़ी ने भी इस सितार, सुरबहार के वादन क्षेत्र में सफलतापूर्वक कदम रखा तथा देश–विदेश में भी इटावा–परम्परा की सितार वादन का प्रचार–प्रसार किया और सभी कलाकार इमदादखानी घराने की सितार वादन परम्परा को विधिवत शैली के साथ निभा रहे हैं। इन कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं:– उ. शुजात खाँ, उ. हिदायत खां, उ. इमरत हुसैन खां, उ. निशात खां, बजाहत खां, उ. शाहिद परवेज़, पं. बुद्धादित्य मुखर्जी, पं. अरविन्द पारिख, श्री हरविन्दर कुमार शर्मा आदि।

IV. निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इटावा घराने का सितार वादन ध्रुपद, ख्याल तथा तंत्रकारी शैली से प्रभावित है, जिसमें मींड, कण, कृनतन, खटका, मुर्की, गमक, कम्पन्न, लहक, हरकत इत्यादि सभी अलंकरणों का प्रयोग किया जाता है। आज इस घराने ने सितारवादन के क्षेत्र में संगीत विद्या की सबसे अधिक सेवा करके शौहरत हासिल की है और यह घराना संगीत जगत में हमेशा अपने योगदान के कारण चमकता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

1. हमारा आधुनिक संगीत, डॉ. सुशील कुमार चौबे, हरिमाधव शरण, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण : 1975
2. सितार वादन की शैलियाँ, रजनी भटनागर, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006
3. जहन–ए–सितार, बी.एस. सुदीप राय, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004
4. भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा, ऐ.वी.ए. पब्लिकेशन्स, मार्डन मार्किट, जालन्धर।
5. घरानागत सितार वादन में आलाप–जोड़ालाप की प्रक्रिया, डॉ. राकेश कुमार, संजय प्रकाशन, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2007

पत्रिकाएं

1. सितार वादक उ. रईस खां, च. ला दास, संगीत, अगस्त–1978, संगीत कार्यालय हाथरस।
2. सितार और उसका विकास–पं. अरविन्द पारिख, संगीत निबन्धवली, जनवरी–1977
3. संगीत कला विहार, जनवरी–2017, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन।